Series RHB

Code No. **3/1**
कोड नं.

Roll No.
रोल नं.

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **16** हैं ।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **16** प्रश्न हैं ।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।**
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

SUMMATIVE ASSESSMENT – II

संकलित परीक्षा – II

HINDI

हिन्दी

(Course A)

(पाठ्यक्रम अ)

निर्धारित समय : 3 घण्टे
Time allowed : 3 hours

अधिकतम अंक : 80
Maximum Marks : 80

निर्देश : *(i)* *इस प्रश्न-पत्र के* ***चार*** *खण्ड हैं — क, ख, ग और घ।*

(ii) *चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना* ***अनिवार्य*** *है ।*

(iii) *यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमशः दीजिए ।*

खण्ड क

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : *1×5=5*

राष्ट्रीय एकता का अर्थ यह है कि देश के सभी नागरिक, चाहे वे किसी भी संप्रदाय, जाति, धर्म, भाषा अथवा क्षेत्र से सम्बन्धित हों, इन सब सीमाओं से ऊपर उठकर इस समूचे देश के प्रति वफ़ादार और आत्मीयतापूर्ण हों । इसके लिए यदि उनको अपने निजी स्वार्थ अथवा समूह के स्वार्थ का भी त्याग करना पड़े तो उसके लिए उन्हें तैयार रहना चाहिए । और उनके लिए देश का हित सर्वोपरि होना चाहिए । किन्तु कभी-कभी तो लगता है कि देश की स्वतंत्रता के बाद हम राष्ट्रीय एकता से विमुख होकर राष्ट्रीय विघटन की ओर अग्रसर हो रहे हैं । स्वतंत्रता के पहले गांधीजी के नेतृत्व में पूरा देश एक होकर अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध लड़ा था । परन्तु उसके बाद पुनः हम धर्म, भाषा, क्षेत्रीयता के नाम से आपसी झगड़ों में उलझ गए हैं । कई बार ऐसा लगता है कि हमारे देश में असमिया, बंगाली, पंजाबी, मराठा, मद्रासी इत्यादि तो हैं, पर भारतीय बिरले ही हैं । हमारा देश प्राचीन काल से ही विभिन्न धर्मों, संप्रदायों, विचारधाराओं तथा परंपराओं का समन्वय-स्थल रहा है परन्तु आधुनिक काल में जब से विभिन्न धर्मों और संप्रदायों में अलगाव होने लगा, पारस्परिक द्वेष, घृणा और संघर्ष बढ़ने लगा, तभी राष्ट्र प्रत्येक दृष्टि से कमज़ोर होने लगा । राजनीतिक दल इस पारस्परिक तनाव का लाभ उठाकर राजनीतिक स्वार्थ पूरा करने लगे । इसीलिए नेहरू जी ने कहा था, "मैं सांप्रदायिकता को देश का सबसे बड़ा शत्रु मानता हूँ ।"

(i) राष्ट्रीय एकता का अर्थ है

(क) परस्पर विरोधी जातियों का एक होना

(ख) विभिन्न भाषा-भाषियों में एक-दूसरे की भाषा के प्रति लगाव होना

(ग) एक-दूसरे के धार्मिक स्थलों के प्रति श्रद्धा-भाव होना

(घ) सभी भेदभावों को भूलकर देश में एकता बनाए रखना

(ii) 'देश का हित सर्वोपरि होना चाहिए' — कथन का तात्पर्य है

(क) अपना काम छोड़कर केवल देश-सेवा

(ख) देश के लिए अपनी प्रिय वस्तु का बलिदान

(ग) देश के लिए जातिगत स्वार्थों का त्याग

(घ) स्वार्थ त्याग कर देश के हित की चिंता

(iii) लेखक को क्यों लगता है कि हम राष्ट्रीय विघटन की ओर बढ़ रहे हैं ?

(क) नागरिकों के आपस में झगड़ने के कारण

(ख) स्वार्थ के लिए देश के हित का त्याग करने के कारण

(ग) धर्म, भाषा और क्षेत्रीयता की भावना के कारण

(घ) परस्पर ऊँच-नीच के भाव के कारण

(iv) लेखक के अनुसार राष्ट्र कमज़ोर क्यों हो रहा है ?

(क) क्षेत्रीयता के पनपने के कारण

(ख) धर्म के नाम पर आपसी झगड़ों के कारण

(ग) राजनीतिक दलों की स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण

(घ) सांप्रदायिक अलगाव, द्वेष और घृणा के कारण

(v) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक हो सकता है

(क) राष्ट्रीय एकता

(ख) धर्म और संप्रदाय

(ग) सांप्रदायिकता

(घ) राष्ट्रीय विचारधारा

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : *1×5=5*

हमारे देश में जातिवाद सबसे जटिल समस्या है । यह समस्या स्वस्थ राष्ट्रीयता के पनपने में बहुत बड़ा बाधक तत्त्व है । कहना कठिन है कि जाति-प्रथा देश में कब जन्मी । इतिहासकार यह मानते हैं कि जब आर्य भारतवर्ष में आए, उस समय उनका सम्मिलन यहाँ के देशवासियों से हुआ । इस तरह प्रारंभ में दो ही सांस्कृतिक समूह थे — आर्य और अनार्य । यह भेद जाति का और संस्कृति का था । जो केवल आर्यों और अनार्यों तक ही सीमित नहीं रहा अपितु धीरे-धीरे आर्यों में भी भेद होने लगा और चार जातियों का प्रादुर्भाव हुआ । यह जाति-व्यवस्था व्यवसाय पर आधारित थी, न कि जन्म पर । कालांतर में जाति-प्रथा जन्म और वंश से सम्बन्धित हो गई । हमारे संविधान के निर्माता यह जानते थे कि जाति-प्रथा और लोकतंत्र एक साथ नहीं रह सकते हैं । उन्होंने संविधान में इस तरह के नियम बनाए जिनके द्वारा किसी भी नागरिक के विरुद्ध जाति के आधार पर भेद-भाव या पक्षपात न हो सके । यह स्थिति दुखद है कि जातिवाद के अनुसार सभी जातियों के व्यवसाय पूर्व निर्धारित

होते हैं। इस प्रकार की व्यवस्था सामाजिक न्याय के विपरीत है । जो भी राष्ट्र का हित चाहते हैं, वे जातिवाद का डटकर मुकाबला करें और उसके उन्मूलन में सहयोग दें ।

(i) भारत में जाति-प्रथा का उद्भव कब से माना जाता है ?

(क) भारत के मूलनिवासियों के उद्भव से

(ख) भारत में आर्यों के आगमन से पूर्व

(ग) भारत के मूलनिवासियों पर आर्यों की विजय के बाद

(घ) भारत में बसे आर्यों में भिन्नता पैदा होने के बाद

(ii) जाति-व्यवस्था का परिणाम नहीं है

(क) स्पृश्यता-अस्पृश्यता का भाव

(ख) ऊँच-नीच का भेद-भाव

(ग) पिछड़े वर्ग के व्यक्ति की योग्यता को नकारना

(घ) जातिगत पक्षपात न होने देना

(iii) जाति-प्रथा का उन्मूलन क्यों आवश्यक है ?

(क) सामाजिक भेदभाव की समाप्ति के लिए

(ख) योग्यता के आधार पर व्यवसाय पाने के लिए

(ग) आर्थिक विषमता को मिटाने के लिए

(घ) राष्ट्रवाद को जन्म देने के लिए

(iv) अनुच्छेद का उपयुक्त शीर्षक होगा

(क) भारत में जाति-प्रथा

(ख) आर्य-अनार्य संस्कृति

(ग) जातिवाद की समस्या

(घ) सामाजिक भेद-भाव

(v) 'समस्या' शब्द की व्याकरणिक कोटि है

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा

(ख) जातिवाचक संज्ञा

(ग) भाववाचक संज्ञा

(घ) द्रव्यवाचक संज्ञा

3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए : *1×5=5*

जिस धरती को तुमने सींचा
अपने ख़ून-पसीने से,
हार गई दुश्मन की गोली
वज्र तुम्हारे सीनों से
जब-जब उठी तुम्हारी बाँहें, होता वश में काल है ।
जिस धरती के लिए सदा
तुमने सब कुछ क़ुर्बान किया
शूली पर चढ़-चढ़ हँस-हँसकर
कालकूट का पान किया
जब-जब तुमने क़दम बढ़ाया, हुई दिशाएँ लाल हैं ।
उस धरती को टुकड़े-टुकड़े
करना चाह रहे दुश्मन
बड़े ग़ौर से अजब तुम्हारी
चुप्पी थाह रहे दुश्मन
जाति-पाँति वर्गों-फ़िरकों के, वह फैलाता जाल है ।
कुछ देशों की लोलुप नज़रें
लगीं तुम्हारी ओर हैं,
कुछ अपने ही जयचंदों के
मन में बैठा चोर है ।
सावधान कर दो उसको जो पहने कपटी खाल है ।

(i) 'धरती को ख़ून-पसीने से सींचने' का अभिप्राय है
- (क) देश के खेतों को जल से सींचना
- (ख) देश के लिए कठिन से कठिन परिश्रम करना
- (ग) देश की सुरक्षा के लिए रात-दिन सावधान रहना
- (घ) देश की रक्षा-हेतु शत्रु पर गोलियाँ चलाना

(ii) काल वश में हो सकता है जब

(क) दुश्मन गोलियाँ न चलाए

(ख) हम रक्षा के लिए बाँहें उठाएँ

(ग) हम हँस-हँसकर कुर्बानी दें

(घ) जाति-पाँति का भेद न रहे

(iii) 'जाति-पाँति' में अलंकार है

(क) यमक

(ख) श्लेष

(ग) अनुप्रास

(घ) उपमा

(iv) 'हुई दिशाएँ लाल हैं' — का तात्पर्य है

(क) देश के कोने-कोने में क्रांति होना

(ख) अन्याय का विरोध होना

(ग) रूढ़िवाद की समाप्ति होना

(घ) जन-जागृति फैलाना

(v) 'सावधान कर दो उसको जो पहने कपटी खाल है' पंक्ति में 'कपटी खाल पहने' किसे कहा गया है ?

(क) जो बेईमान है

(ख) जो देशप्रेम का दिखावा करता है

(ग) जो विश्वासघाती है

(घ) जो अपनी कायरता को छिपाता है

4. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाला विकल्प चुनकर लिखिए : $1 \times 5 = 5$

जो नहीं हो सके पूर्ण-काम
मैं उनको करता हूँ प्रणाम ।
जो छोटी-सी नैया लेकर
उतरे करने को उदधि पार
मन की मन में ही रही, स्वयं
हो गए उसी में निराकार !
— उनको प्रणाम !
जो उच्च शिखर की ओर बढ़े
रह-रह नव-नव उत्साह भरे;
पर कुछ ने ले ली हिम-समाधि,
कुछ असफल ही नीचे उतरे !
— उनको प्रणाम !
कृत-कृत्य नहीं जो हो पाए;
प्रत्युत फाँसी पर गए झूल
कुछ ही दिन बीते हैं, फिर भी
यह दुनिया जिनको गई भूल !
— उनको प्रणाम !
थी उग्र साधना, पर जिनका
जीवन-नाटक दुःखान्त हुआ;
था जन्मकाल में सिंह लग्न
पर कुसमय ही देहांत हुआ !
— उनको प्रणाम !

(i) कवि उन्हें प्रणाम कर रहा है जो
(क) काम में असफल हो गए हैं
(ख) असफलता की चिंता किए बिना लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं
(ग) सीमित साधनों के कारण पीछे हट गए हैं
(घ) जीवन-भर दुखी रहे हैं

(ii) 'जो उच्च शिखर की ओर बढ़े' में 'उच्च शिखर' प्रतीक है

(क) पहाड़ की ऊँची चोटी

(ख) बहुत प्रिय वस्तु

(ग) जीवन में ऊँचा लक्ष्य

(घ) ऊँचा पद पा जाना

(iii) 'प्रत्युत फाँसी पर गए झूल' पंक्ति में किनकी ओर संकेत है ?

(क) जो असामाजिक तत्त्व हैं

(ख) जो देश से गद्दारी कर रहे हैं

(ग) जिनके बलिदान को लोगों ने भुला दिया है

(घ) जिनके कामों को लोग भूल जाना चाहते हैं

(iv) 'जीवन-नाटक दुःखांत होना' का भाव है

(क) दुख-भरा जीवन

(ख) असमय निधन

(ग) दुखांत नाटक

(घ) असफल जीवन

(v) 'जीवन-नाटक' में अलंकार है

(क) उपमा

(ख) श्लेष

(ग) उत्प्रेक्षा

(घ) रूपक

खण्ड ख

5. (i) जहाँ दो स्वतंत्र वाक्य समुच्चयबोधक द्वारा जुड़े हों, उसे कहते हैं *1*

(क) सरल वाक्य

(ख) संयुक्त वाक्य

(ग) मिश्र वाक्य

(घ) जटिल वाक्य

(ii) निम्नलिखित वाक्यों में से मिश्र वाक्य छाँटिए : *1*

(क) मुख्य अतिथि आने वाले थे किन्तु नहीं आए ।

(ख) मैं महँगी कमीज़ नहीं खरीदूँगा ।

(ग) जो ईमानदार है, वही इस सम्मान का अधिकारी है ।

(घ) वह विदेश गया और मेरे लिए उपहार लाया ।

(iii) निम्नलिखित वाक्यों में से संयुक्त वाक्य का चयन कीजिए : *1*

(क) मैंने उसे नियमित पढ़ने के लिए कहा था लेकिन उसने अनसुनी कर दी ।

(ख) तुम्हारे विचार ऐसे हैं जो उनको मान्य नहीं हैं ।

(ग) उस युग में विलासिता का साम्राज्य था ।

(घ) वहाँ एक व्यक्ति रहता है जिसके पास अपार संपत्ति है ।

(iv) जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय होता है, उसको कहते हैं *1*

(क) मिश्र वाक्य

(ख) संयुक्त वाक्य

(ग) सरल वाक्य

(घ) जटिल वाक्य

6. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों के पद-परिचय के लिए दिए गए विकल्पों में सही विकल्प का चुनाव कीजिए : *1×4=4*

(i) वह <u>बीहड़</u> जंगल में भटक गया ।

(क) विशेषण, परिमाणवाचक, पुल्लिग, एकवचन

(ख) विशेषण, संख्यावाचक, पुल्लिग, एकवचन

(ग) विशेषण, सार्वनामिक, पुल्लिग, एकवचन

(घ) विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिग, एकवचन

(ii) मैं सवेरे <u>उठता हूँ</u> ।

(क) सकर्मक क्रिया, पुल्लिग, एकवचन, उत्तम पुरुष

(ख) अकर्मक क्रिया, पुल्लिग, एकवचन, उत्तम पुरुष

(ग) प्रेरणार्थक क्रिया, पुल्लिग, एकवचन, प्रथम पुरुष

(घ) नामधातु, पुल्लिग, एकवचन, उत्तम पुरुष

(iii) मैं <u>प्रतिदिन</u> घूमने जाता हूँ ।

(क) क्रिया-विशेषण, रीतिवाचक, 'घूमने जाता हूँ' का विशेषण

(ख) क्रिया-विशेषण, कालवाचक, 'घूमने जाता हूँ' का विशेषण

(ग) क्रिया-विशेषण, स्थानवाचक, 'घूमने जाता हूँ' का विशेषण

(घ) विशेषण, परिमाणवाचक, 'घूमने जाता हूँ' का विशेषण

(iv) मोहन से <u>कोई</u> मिलने आया है ।

(क) पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग

(ख) अनिश्चयवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग

(ग) प्रश्नवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग

(घ) निजवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग

7. (i) कर्तृवाच्य कहते हैं

(क) जहाँ कर्म प्रधान होता है

(ख) जहाँ कर्ता प्रधान होता है

(ग) जहाँ भाव प्रधान होता है

(घ) जहाँ अन्य पद प्रधान होता है

(ii) निम्नलिखित में कर्तृवाच्य वाला वाक्य छाँटिए :

(क) तुमसे पतंग नहीं उड़ाई जाएगी ।

(ख) सारे दिन कैसे पढ़ा जाएगा ।

(ग) तुम शोर क्यों मचाते हो ।

(घ) दवाई निगली ही नहीं जा रही है ।

(iii) निम्नलिखित में से कर्मवाच्य वाला वाक्य छाँटिए :

(क) पुलिस ने अपराधियों को पकड़ लिया है ।

(ख) बाढ़-पीड़ितों में खाद्य सामग्री बाँटी जा रही है ।

(ग) आइए, चला जाय ।

(घ) वह दिन-भर कैसे काम करता रहा ?

(iv) निम्नलिखित में से भाववाच्य वाले वाक्य का चयन कीजिए :

(क) अब हम चल नहीं पा रहे हैं ।

(ख) भारत ने मित्रता का हाथ बढ़ाया है ।

8. (i) निम्नलिखित वाक्यों में संयुक्त वाक्य का चयन कीजिए : *1*

(क) वह अपने को क्या समझता है ?

(ख) सायंकाल होते ही पानी बरसने लगा ।

(ग) मोहन प्रतिदिन व्यायाम करता है ।

(घ) मैं मंदिर जाऊँगा और तब भोजन करूँगा ।

(ii) मैं तुम्हें सम्मान का पात्र मानता हूँ — रेखांकित शब्द है *1*

(क) संज्ञा

(ख) सर्वनाम

(ग) क्रिया

(घ) विशेषण

(iii) 'तुमने अच्छी चाल चली' वाक्य का कर्मवाच्य होगा *1*

(क) तुम अच्छी चाल चल लेते हो ।

(ख) तुमसे अच्छी चाल चलने की आशा थी ।

(ग) तुम्हारे द्वारा क्या चाल चली जाएगी ।

(घ) तुम्हारे द्वारा अच्छी चाल चली गई ।

(iv) 'संध्या-सुंदरी परी-सी' में कौन-सा अलंकार नहीं है ? *1*

(क) अनुप्रास

(ख) उत्प्रेक्षा

(ग) रूपक

(घ) उपमा

9. (i) किस अलंकार में स्वरों का भेद होने पर भी व्यंजनों की आवृत्ति होती है ? *1*

(क) यमक

(ख) श्लेष

(ग) अनुप्रास

(घ) उत्प्रेक्षा

(ii) 'जेते तुम तारे तेते नभ में न तारे हैं' पंक्ति में अलंकार है — 1

(क) अनुप्रास
(ख) श्लेष
(ग) उपमा
(घ) यमक

(iii) निम्नलिखित में 'रूपक' अलंकार का उदाहरण छाँटिए : — 1

(क) नील गगन-सा शांत हृदय था हो रहा ।
(ख) हरिपद कोमल कमल-से ।
(ग) चरणकमल बन्दौं हरिराई ।
(घ) ज्यों जल माँह तेल की गागरि ।

(iv) निम्नलिखित काव्यांश में उपमेय का चयन कीजिए : — 1

'निकल रही थी मर्मवेदना करुणा-विकल कहानी-सी'

(क) मर्मवेदना
(ख) करुणा विकल
(ग) कहानी
(घ) निकल रही

खण्ड ग

10. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए : — *1×5=5*

पिता के ठीक विपरीत थीं हमारी बेपढ़ी-लिखी माँ । धरती से कुछ ज्यादा ही धैर्य और सहनशक्ति थी शायद उनमें । पिताजी की हर ज़्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित-अनुचित फ़रमाइश और ज़िद को अपना फ़र्ज समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थीं वे । उन्होंने ज़िंदगी-भर अपने लिए कुछ माँगा नहीं, चाहा नहीं — केवल दिया ही दिया । हम भाई-बहनों का सारा लगाव (शायद सहानुभूति से उपजा) माँ के साथ था लेकिन निहायत असहाय मजबूरी में लिपटा उनका यह त्याग कभी मेरा आदर्श नहीं बन सका.... न उनका त्याग, न उनकी सहिष्णुता ।

(i) कौन-सी विशेषता माँ की नहीं है ?

(क) बेपढ़ा-लिखा होना
(ख) सबकी सेवा करना
(ग) आवेश और क्रोध
(घ) धैर्य और सहनशीलता

(ii) कैसे कहा जा सकता है कि लेखिका की माँ में धरती से अधिक सहनशक्ति थी ?

(क) पिता की ज़्यादतियाँ और बच्चों की फ़रमाइशें मानती थीं ।

(ख) उन्होंने पारिवारिक दायित्वों को निभाया था ।

(ग) अपने शान्त स्वभाव के कारण सहनशील थीं ।

(घ) धनाभाव की कठिनाइयों ने उन्हें सहनशील बना दिया था ।

(iii) माँ ने किसे क्या नहीं दिया ?

(क) संसार को लगाव

(ख) अपनों को सहानुभूति

(ग) परिवार को प्यार

(घ) अपने आपको सुख-सुविधा

(iv) लेखिका के लिए उनकी माँ की त्याग-भावना आदर्श क्यों नहीं बन सकी ?

(क) पिता के व्यवहार के कारण

(ख) विवशता में किए जाने के कारण

(ग) ईर्ष्या के कारण

(घ) अतीत में घटी घटनाओं की प्रतिक्रिया के कारण

(v) 'हम भाई-बहिनों का सारा लगाव माँ के साथ था लेकिन निहायत असहाय मजबूरी में लिपटा उनका यह त्याग मेरा आदर्श न बन सका' — यह किस प्रकार का वाक्य है ?

(क) मिश्र

(ख) संयुक्त

(ग) साधारण

(घ) सरल

अथवा

नाटकों में स्त्रियों का प्राकृत बोलना उनके अपढ़ होने का प्रमाण नहीं । अधिक से अधिक इतना ही कहा जा सकता है कि वे संस्कृत न बोल सकती थीं । संस्कृत न बोल सकना न अपढ़ होने का सबूत है और न गँवार होने का । अच्छा तो उत्तररामचरित में ऋषियों की वेदान्तवादिनी पत्नियाँ कौन-सी भाषा बोलती थीं ? उनकी संस्कृत क्या कोई गँवारी संस्कृत थी ? भवभूति और कालिदास आदि के नाटक जिस ज़माने के हैं उस ज़माने में शिक्षितों का समस्त समुदाय संस्कृत ही बोलता था, इसका प्रमाण पहले कोई दे ले, तब प्राकृत बोलने वाली

स्त्रियों को अपढ़ बताने का साहस करे । इसका क्या सबूत कि उस ज़माने में बोलचाल की भाषा प्राकृत न थी ? सबूत तो प्राकृत के चलन के ही मिलते हैं । प्राकृत यदि उस समय की प्रचलित भाषा न होती तो बौद्धों और जैनों के हज़ारों ग्रंथ उसमें क्यों लिखे जाते, और भगवान् शाक्य मुनि तथा उनके चेले प्राकृत ही में क्यों धर्मोपदेश देते ? बौद्धों के त्रिपिटक ग्रंथ की रचना प्राकृत में किए जाने का एकमात्र कारण यही है कि उस ज़माने में प्राकृत ही सर्वसाधारण की भाषा थी ।

(i) संस्कृत नाटकों में स्त्रियों के लिए प्राकृत बोलने का विधान था, क्योंकि
- (क) वे अपढ़ होती थीं
- (ख) संस्कृत नहीं बोल सकती थीं
- (ग) वे गँवार थीं
- (घ) उस युग में बोलचाल की भाषा प्राकृत थी

(ii) लेखक क्या सिद्ध करने की चुनौती देता है ?
- (क) कालिदास और भवभूति संस्कृत नाटककार थे ।
- (ख) कालिदास के युग में सब संस्कृत ही बोलते थे ।
- (ग) कालिदास के युग में सब प्राकृत ही बोलते थे ।
- (घ) कालिदास और भवभूति का इतिहास में कोई प्रमाण नहीं है ।

(iii) बौद्धों के त्रिपिटक ग्रंथ की भाषा है
- (क) पालि
- (ख) संस्कृत
- (ग) अपभ्रंश
- (घ) प्राकृत

(iv) भगवान शाक्य मुनि और उनके शिष्य प्राकृत में ही धर्मोपदेश क्यों देते थे ?
- (क) उन्हें संस्कृत का ज्ञान नहीं था ।
- (ख) वे केवल प्राकृत ही जानते थे ।
- (ग) वे अपढ़ थे ।
- (घ) सर्वसाधारण की भाषा प्राकृत ही थी ।

(v) 'पत्नियाँ कौन-सी भाषा बोलती थीं ?' वाक्य में 'कौन-सी' शब्द व्याकरण की दृष्टि से है ?
- (क) सर्वनाम
- (ख) सार्वनामिक विशेषण
- (ग) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
- (घ) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

11. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए : *2×5=10*

(क) 'एक कहानी यह भी' पाठ की लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा ?

(ख) फ़ादर की उपस्थिति देवदार की छाया जैसी क्यों लगती थी ? 'करुणा की दिव्य चमक' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

(ग) बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक क्यों कहा गया है ? 'नौबतखाने में इबादत' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए ।

(घ) 'संस्कृति' पाठ में वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहा गया है ?

(ङ) स्त्री-शिक्षा के विरोधियों ने क्या-क्या तर्क देकर स्त्री-शिक्षा का विरोध किया है ? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए ।

12. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा । तुम्हहि अछत को बरनै पारा ।।
अपने मुहु तुम्ह आपनि करनी । बार अनेक भाँति बहु बरनी ।।
नहि संतोषु त पुनि कछु कहहू । जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू ।।
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा । गारी देत न पावहु सोभा ।।

(क) कविता में लक्ष्मण परशुराम के किस यश की ओर संकेत कर रहे हैं ? *1*

(ख) वे उनसे क्या अनुरोध कर रहे हैं ? *2*

(ग) 'बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा । गारी देत न पावहु सोभा ।।' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए । *2*

अथवा

यश है या न वैभव है, मान है न सरमाया;
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया ।
प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है,
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है ।
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन-
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना ।

(क) कवि के 'भरमाने' का क्या कारण है ? *2*

(ख) 'प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए । *2*

(ग) कविता में किस यथार्थ के पूजन की बात कही गई है ? *1*

13. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए :

(क) 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' काव्यांश के आधार पर राम और लक्ष्मण के स्वभाव की विशेषताएँ लिखिए । *2*

(ख) 'फ़सल' कविता में फ़सल किसे कहा गया है ? स्पष्ट कीजिए । *2*

(ग) 'संगतकार' किस प्रकार के व्यक्ति का प्रतीक है ? 'संगतकार' कविता के आधार पर समझाइए । *1*

14. 'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा !' कहानी के अनुसार दुलारी और टुन्नू ने भारत के स्वाधीनता आंदोलन में अपना योगदान किस प्रकार दिया ? *5*

अथवा

'साना-साना हाथ जोड़ि' यात्रा-वृत्तान्त के 'जितेन नोर्गे' की चारित्रिक विशेषताओं के आधार पर लिखिए कि एक कुशल गाइड में क्या-क्या गुण होने चाहिएँ ।

खण्ड घ

15. निम्नलिखित में से किसी ***एक*** विषय पर निबन्ध लिखिए : *5*

(क) आँखों-देखी बाढ़

(ख) यदि मैं अभिनेता होता

(ग) देश के प्रति हमारे कर्तव्य

16. भारतीय वायुसेना में 'पाइलट' के पद के लिए आयोजित प्रतियोगिता परीक्षा में असफल मित्र को ढाढ़स बँधाते हुए पुनः प्रयास के लिए एक प्रेरणा-पत्र लिखिए । *5*

अथवा

अपने नगर के एक प्रख्यात विद्यालय को उनके छात्रों की अनुशासनहीनता की घटनाओं का उल्लेख करते हुए प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर उचित कार्यवाही के लिए अनुरोध कीजिए ।